ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

गीतिकाव्य के रूप में मेघदूत की समीक्षा

Review of Meghdoot as lyric

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

दिव्या
सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
आर्य महिला पी.जी. कॉलेज,
वाराणसी उ०प्र० भारत

सारांश

भारतीय ही नहीं संपूर्ण प्राच्य वाङ्मय में के अंतर्गत वर्णित कवियों की श्रंखला में महाकवि कालिदास श्रेष्ठ माने जाते हैं अभिशाप एवं विश्व वेदना से संतप्त यक्ष के द्वारा मेघ को दूत बनाकर अपनी प्रिया यक्षिणी के पास संदेश भेजने की मौलिक कल्पना पर आधारित मेघदूत महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध रचनाओं में विश्व विश्रुत खंडकाव्य है इसमें करुणा विप्रलम्भ श्रृङ्गार की प्रधानता है इसकी पुष्टि हेतु मंदाक्रांता छंद का आश्रय दिया गया है इसमें भारतभूमि के सौन्दर्य चित्रण के साथ–साथ भाव जगत की का भी उद्घाटन हुआ है सरिता से कोमलता गया था भाव प्राण तथा इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं डॉ भोला शंकर व्यास ने इसे विशेष प्रधान भावात्मक गीती काव्य की संज्ञा दी है।

Mahakavi Kalidas is considered to be the best in the series of poets described under Indian not only in oriental poetry, Meghdoot Mahakavi Kalidas based on the original imagination of sending a message to his beloved Yakshini by making Megh the messenger through Yaksha, who is bereft of curse and world pain. There is a world-wide Khandakavya in the compositions, in which compassion is the preeminence of the beginning of life, to confirm that Mandakranta stanza has been given shelter in it, along with the depiction of Bharatmabhoomi, as well as the sentiment of the world, there is inauguration of the soul and tenderness. Its main features are Dr. Bhola Shankar Vyas has called it a special predominant affective Geeti poetry.

मुख्य शब्द : महाकवि कालिदास, मेघदूत, आदर्शप्रेम, विश्वविश्रुत।
Mahakavi Kalidasa, Meghdoot, Adarshram, Vishwashishruta.

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास सम्पूर्ण प्राच्य वाङ्मय के सर्वश्रेष्ठ कवि एवं उत्तम नाटककार माने जाते हैं। उन्हें कविकुलगुरु, कवि शिरोमणि, कविता कामिनी का विलास, उपमा सम्राट आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है। उन्हें भारत का शेक्सपीयर कहा गया है। उनकी प्रसिद्ध सात रचनाओं में मेघदूत विश्वविश्रुत काव्य है। साहित्यजगत् में मेघदूत की गणना लघुत्रयी के अन्तर्गत की गयी है। पूर्व और उत्तर दो भागों में विभक्त मेघदूत में कुबेर के शाप से अभिशप्त एक विरही यक्ष के द्वारा विरहानल सन्तप्त अपनी प्रिया यक्षिणी के पास सन्देश भेजने की मौलिक कल्पना की गयी है। महाकवि कालिदास ने मेघदूत में उस कामभाव का वर्णन किया है जिसके कारण यक्ष अत्यन्त अधीर है तथा उस प्रवास का वर्णन किया है जो शाप की विवशता के कारण यक्ष को उसकी प्रिया यक्षिणी से अलग रखे हुए है। यक्ष और यक्षिणी दोनों ही स्नेह के भोगी हैं। उनके स्नेह की अभिव्यक्ति वियोग में विविध अभिलाषाओं के रूप में प्रकट होती है। उन्होंने मेघदूत में आदर्शप्रेम का मानदण्ड स्थापित किया है। कामवासना से रहित व्यक्ति को ही वास्तविक प्रेम की प्राप्ति होती है। यक्ष की एकनिष्ठता ही दाम्पत्य–जीवन का सार है।

'मेघदूत' का आधार शब्द, अर्थ, चेतना और रसात्मकता है। महाकवि कालिदास ने मेघदूत में विप्रलम्भश्रृङ्गार का आश्रय लिया है तथा विप्रलम्भश्रृङ्गार की पुष्टि के लिए उन्होंने रुक–रुककर चलनेवाली मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग किया है।

'खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारी च'[1] के अनुसार महाकाव्य के एकदेश का अनुसरण करने के कारण, महाकाव्य की अपेक्षा स्वल्पकाय होने के कारण तथा नायक के जीवन के एक पहलू अथवा एक घटना का वर्णन होने के कारण इसे खण्डकाव्य कहा गया है। गेयता, भावप्रवणता आदि गीतितत्त्वों से

समन्वित होने के कारण इसे गीतिकाव्य भी कहा गया है। पाश्चात्य विद्वान् ए.वी. कीथ ने इसे शोकगीति, डॉ0 भोलाशङ्करव्यास ने भावात्मक गीतिकाव्य, मैक्डोनल ने गीतिरत्न तथा प्रो0 हरियन्ना ने सर्वश्रेष्ठ गीतिकाव्य में से एक माना है। डॉ0 दशरथ ओझा ने गीतिकाव्य को परिभाषित करते हुए लिखा है – 'जिस छन्दबद्ध रचना में भावातिरेक की धारा इस रूप में प्रवाहित हो कि उसमें स्वरलहरियाँ तरङ्गायित हो, जिसमें कवि या पात्र की रागात्मकता उसके व्यक्तित्व के साथ मिलकर आत्मनिवेदन के रूप में प्रकट हो, जिसका आयतन इतना बड़ा हो कि उसमें कवि की रागात्मकता का प्रवाह शिथिल न पड़ जाय, जिसमें घटनावर्णन को गौण किन्तु भावना को उच्चतम स्थान प्राप्त हो, जिस काव्य में लय अथवा एक ही भाव के साथ–साथ एक ही निवेदन, एक ही रस एवं एक ही परिपाटी हो, वह गीतिकाव्य है।'[2]

गीतिकाव्य को दो भागों में विभाजित किया गया है – स्तोत्रकाव्य/ भक्तिकाव्य तथा द्वमत्रइङ्गारकाव्य/सन्देशकाव्य। जिसमें अध्यात्मिक भावना से उद्भूत होकर भक्तजनों के एकान्तिक हृदयोद्गार अथाह वेग से प्रवाहित होते हैं उन्हें स्तोत्रकाव्य/भक्तिकाव्य कहा जाता है। जिन गीतिकाव्यों में श्रृङ्गार की भावना का प्राधान्य हो, उन्हें सन्देशकाव्यों के अन्तर्गत रखा गया है।

मेघदूत में महाकवि कालिदास ने मनोरम कल्पनाओं के द्वारा मानवजीवन की अनुभूतियों का सफल एवं मनोरम चित्रण किया है। प्रेम का सच्चा स्वरूप वेदना की गीली पलकों पर ही निखरता है। यक्ष कुबेर के द्वारा अभिशप्त होकर अपनी प्रेयसी यक्षिणी से अलग रामगिरि पर्वत पर प्रवासित होकर विरह की अग्नि में जल रहा है और तड़प रहा है। प्रणय की तीव्रता और विरह की वेदना आषाढ़मास के मेघ से तादात्म्य स्थापित कर उसे अपना दूत बनाकर अपनी प्रेयसी के पास सन्देश भेजने के लिए अनुनय–विनय करता है तथा मेघ के सामने ठहरकर आँसूओं को भीतर–भीतर रोकते हुए देर तक सोचता है –

तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्तिचेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनरर्दूरसंस्थे।।[3]

मेघदूत सुख–दुःख, राग–द्वेष, आशा–निराशा तथा प्रेम की पीड़ा पर आधारित है –

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी–
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।।[4]

यक्ष मेघ से कहता है कि हे मेघ! विरह के दिनों को गिनने में संलग्न, मेरे आगमन की आशा से प्राणधारण करनेवाली, पतिव्रता अपनी भाभी को बिना रुके हुए जाते हुए तुम अवश्य देखोगे, क्योंकि नारियों के फूल की तरह सुकुमार, प्रेम से भरे हुए हृदय को आशा का बन्धन ही विरह में अकस्मात् बिखर जाने से रोके रहता है।

अलङ्कारप्रधान भाषा में चित्रोपमता के साथ संगीत की मधुर एवं मन्द भावधारा के उदाहरण मेघदूत में दर्शनीय है –

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः।।[5]

गीतिकाव्य के तत्त्वों के अन्तर्गत भाषा एवं शैली की प्राञ्जलता, लालित्य, माधुर्य, सुकोमल भावना तथा संगीत का सामञ्जस्य आदि तत्त्वों का समावेश हो जाता है। मेघदूत में गीतिप्रधान शैली का आश्रय लिया गया है। गीतिकाव्य की पूर्ण परिणति संगीत में न होकर शब्दों के संगीतात्मक निबन्ध में है और प्रत्येक शब्द का अपना नाद सौन्दर्य है। मेघदूत के मन्दाक्रान्ता छन्द एवं मेघ की मन्दमन्थर गति में प्राकृत सम्बन्ध है। मेघ अन्तर्घनत्व के कारण मन्थर गति से मन्द–मन्द विचरण करता है। यक्ष हृदय से चाहता है कि देश और काल दोनों का अभाव हो जाए और उसका दूत मेघ यथाशीघ्र अलका पहुँच जाए। वह अपने दूत मेघ से निवेदन करता है –

उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे मत्प्रियार्थं यियासोः
कालक्षेपं ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते।
शुक्लापाङ्गैः सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केकाः
प्रत्युद्यातः कथमपि भवान् गन्तुमाशु व्यवस्येत्।।[6]

हे मित्र! तुम कितने भी शीघ्रगति से चलोगे किन्तु मार्ग में आने वाले प्रत्येक पर्वत पर समय बिताये बिना तुम्हारा आगे बढ़ना सम्भव नहीं है। यह नादसौन्दर्य का अद्भुत उदाहरण है।

यक्ष मेघ से पुनः निवेदन करता है कि तुम उज्जयिनी के वैभव को देखकर मन्द उत्साह वाले कभी मत होना, क्योंकि मित्र के कार्य को अङ्गीकार करने वाले सज्जन कभी विलम्ब नहीं करते हैं। यह महाकवि कालिदास की शैली की उपदेशात्मकता को प्रमाणित करती है।

मेघदूत में प्रत्येक शब्द का अपना नादसौन्दर्य है, शब्द जहाँ एक ओर पाठकों को अर्थ की भावभूमि पर ले जाते हैं, वही दूसरी ओर नाद के द्वारा श्रव्यमूर्तविधान भी करते हैं। नाद का बहुत ही सुन्दर उदाहरण दर्शनीय है –

शब्दायन्ते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः
संसक्ताभिस्त्रिपुरविजयो गीयते किन्नरीभिः।
निर्ह्लादस्ते मुरज इव चेत्कन्दरेषु ध्वनिः स्यात्
संगीतार्थो ननु पशुपतेस्तत्र भावी समग्रः।।[7]

हवाओं से सूखे बाँस बजते हैं, किन्नरियाँ उसके साथ कण्ठ मिलाकर शिव की त्रिपुरविजय के गान गाती हैं। यक्ष मेघ से कहते हैं कि हे मेघ! कन्दराओं में गूँजता हुआ तुम्हारा गर्जन यदि मृदङ्ग से निकलती हुई ध्वनि की तरह उसमें मिल गया तो शिवजी का संगीत पूर्ण हो जाएगा।

नादस्पर्श का उदाहरण

अप्यन्यस्मिञ्जलधर! महाकालमासाद्य काले
स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः।
कुर्वन्संध्यालिपटहतां शूलिनः श्लाघनीया –
मामन्द्राण फलमविकलं लप्स्यसे गर्जितानाम्।।[8]

– हे मेघ! सन्ध्या के अतिरिक्त समय में भी यदि तुम महाकाल के मन्दिर में पहुँचोगे तो तुम तब तक वहाँ ठहरना जब तक सूर्य अस्त न हो जाए। सन्ध्याकाल में महादेव की पूजा में प्रशंसनीय नगाड़े का काम करते हुए तुम अपने कुछ गम्भीर गर्जनाओं के अखण्ड फल को प्राप्त कर लोगे।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध का भी बहुत ही रोचक उदाहरण मेघदूत में प्राप्त हो जाता है –

गन्धस्पर्श का उदाहरण –

आसीनानां सुरभितशिलं नाभिगन्धैर्मृगाणां
तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौरं तुषारैः।
वक्ष्यस्यध्वश्रमविनयने तस्य ङ्गमत्रङ्गे निवण्णः
शोभां शुभ्रत्रिनयवृषोत्खातपङ्कोपमेयाम्।।[9]

– हे मेघ ! बैठे हुए कस्तूरीमृगों की नाभि के गन्धों से सुगन्धित पत्थरों से युक्त, गङ्गाजी के उत्पत्ति–कारण, हिमशुभ्र हिमालय पर्वत पर पहुँचकर मार्ग के परिश्रम को हटानेवाली उसकी चोटी पर बैठे हुए तुम शिवजी के सफेद साड़ से विदारित कीचड़ के समान कान्ति को धारण कर लोगे।

जालोद्गीर्णैरुपचितवपुः केशसंस्कारधूपै –
र्बन्धुप्रीत्या भवनशिखिभिर्दत्तनृत्योपहारः।
हर्म्येष्वस्याः कुसुमसुरभिष्वध्वखेदं नयेथा
लक्ष्मीं पश्यँल्ललितवनितापादरागाङ्कितेषु।।[10]

– खिड़कियों के मार्ग से निकलते हुए स्त्रियों के केशों को सुगन्धित करनेवाले धूपों से परिपुष्ट शरीरवाले तथा बन्धु के आगमन की प्रीति से भवन के मयूरों से नृत्यरूप उपहार प्राप्त करते हुए तुम फूलों से सुगन्धित, सुन्दरियों के चरणों के लाक्षाराग से चिह्नित धनियों के भवनों में उज्जयिनी की शोभा को देखते हुए मार्ग के परिश्रम को दूर करो। यह भी स्पर्श का उदाहरण है –

पश्चादुच्चैर्भुजतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः
सान्ध्यं तेजः प्रतिनवजपापुष्परक्तं दधानः
नृत्यारम्भे हर पशुपतेरार्द्रनागाजिनेच्छां
शान्तोद्वेगस्तिमितनयनं दृष्टभक्तिर्भवान्याः।।[11]

– यक्ष मेघ से कहता है कि संध्या में पूजा के अनन्तर शिवजी के नृत्य के आरम्भ में नये जपापुष्प के समान लाल सन्ध्याकाल के तेज को धारण करते हुए शिवजी के ऊँचे बाहुवन को मण्डलाकार से व्याप्त करते हुए तथा गजासुर के चर्म को देखने से उत्पन्न भय के हट जाने से पार्वती से निश्चल नेत्रों से जिसकी भक्ति देखी जाती है ऐसे तुम गजासुर के आर्द्रचर्म को धारण करने की शिवजी की इच्छा को पूर्ण करना। गजासुर का संहार करने के अनन्तर भगवान शिवजी ने उसके आर्द्रचर्म को बाहुमण्डल से धारण करके ताण्डवनृत्य किया था, इसी प्रसिद्धि का इस श्लोक में वर्णन किया गया है।

गीतिकाव्य के तत्त्वों में श्रृङ्गारिक, धार्मिक, नीतिपरक तथा प्राकृतिक वर्ण्यविषयों का भी समावेश किया गया है। मेघदूत में इन सभी तथ्यों का महाकवि कालिदास ने बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। मानव की अन्तः एवं बाह्यप्रकृति का अत्यन्त सुन्दर वर्णन मेघदूत में दिखलाई पड़ता है; प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा निम्नलिखित श्लोकों में दर्शनीय है –

रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ता
द्वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनुःखण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते
बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णोः।।[12]

पद्मरागादि मणियों के कान्तियों के मिश्रण के समान दर्शनीय इन्द्रधनुष सामने वल्मीक के अग्रभाग से निकलता हुआ दिखलाई पड़ रहा है, जिससे श्यामवर्णवाला तुम्हारा शरीर उज्ज्वल कान्तिवाले मोरशिखा से गोपालवेशधारी कृष्ण के शरीर के समान अतिशय शोभा को प्राप्त कर लेगा।

छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै
स्त्वय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे।
नूनं यास्त्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः।।[13]

– जिस समय मेघ आम्रकूट पर्वत के शिखर पर आश्रय लेगा तो काले रंग के मेघ तथा पके हुए फलों से युक्त आम्रकूटपर्वत की शोभा किस प्रकार की होगी उसी का वर्णन इस श्लोक में किया गया है। मेघदूत में प्रकृति का मानवीकरण अत्यन्त ही सुन्दर ढंग से किया गया है। प्रकृतिसौन्दर्य के माध्यम से नारीसौन्दर्य का महनीय चित्र प्रस्तुत किया गया है –

वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।।[14]

इसमें निर्विन्ध्यानदी तथा मेघ में नायिका एवं नायक के व्यवहार का आरोप किया गया है। जिस प्रकार कोई नायिका अपने प्रियतम से प्रणययाचना करने के लिए करधनी से शब्द करती है तथा इठलाती एवं बलखाती हुई चलती है उसी प्रकार निर्विन्ध्यानदी कूजते हुए पक्षियों की पंक्तिरूपी करधनी का शब्द करती हुई पत्थरों से टकराती हुई चलती है। इस श्लोक में नाद एवं सौन्दर्य का मधुर विनियोग दर्शनीय है।

निर्विन्ध्या नदी का विरहसुन्दरी नायिका के रूप में भी कवि ने वर्णन किया है–

वेणीभूतप्रतनुसलिलाऽसावतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः।
सौभाग्यं ते सुभग ! विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः।।[15]

गम्भीरानदी के मानवीकरण का उदाहरण –

गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने
छायात्मापि प्रकृतिसुभगो लप्स्यते ते प्रवेशम्।
तस्मादस्याः कुमुदविशदान्यर्हसि त्वं न धैर्या –
न्मोघीकर्त्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि।।[16]

यहाँ गम्भीरा नदी के माध्यम से गम्भीरा नायिका के विषय में बताया गया है। गम्भीरा वह नायिका है जिसके रोष या तुष्टि का पता नहीं चलता है। जिस प्रकार किसी गम्भीरस्वभाववाली नायिका के निर्मल चित्त में किसी सुन्दर नायक का चित्र समा जाता है उसी प्रकार गम्भीरानदी के निर्मल जल में मेघ का छायारूप प्रतिबिम्ब प्रवेश प्राप्त कर जाएगा। यक्ष मेघ से कहता है कि हे मेघ! कुमुदों की भाँति उज्जवल तथा चञ्चल मछलियों के उछलने रूप गम्भीरानदी के निरीक्षणों को तुम धैर्यपूर्वक निष्फल करने योग्य नहीं हो। इस पद्य से यह ध्वनित

होता है कि छायापुरुष सिद्ध कर लेने पर जिस प्रकार व्यक्ति की कोई कामना निष्फल नहीं होती उसी प्रकार इनकी भी कामना तुम्हें व्यर्थ नहीं करना चाहिए। मेघ की छाया जल में पड़ते ही मछलियाँ उछलने लगती हैं और यह उछलना ही उनके आधानकाल का द्योतक है; ऐसी लोकप्रसिद्धि है।

मयूरों को मेघ का बन्धु कहा गया है। मेघ और मयूर की मैत्री जगद् प्रसिद्ध है। बादलों की गर्जना से मोर नाचने लगते हैं ऐसी कविसमयप्रसिद्धि है। आकाश में जब मेघ का दर्शन होता है तो मयूरों के नेत्र आनन्दाश्रु से भर जाते हैं और वे पंख फैलाकर नृत्य करना आरम्भ कर देते हैं –'शुक्लापाङ्गैः सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केकाः।'

ज्योतिर्लेखावलयि गलितं यस्य बर्हं भवानी
पुत्रप्रेम्ना कुवलयदलप्रापि कर्णे करोति।
धौतापाङ्गं हरशशिरुचा पावकेस्तं मयूरं
पश्चादद्रिग्रहणगुरुभिर्गजितैर्नर्तयेथाः।।[17]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मेघदूत में नायक यक्ष के सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन न होकर एक भाग का वर्णन होने के कारण इसे खण्डकाव्य कहा गया है। इस खण्डकाव्य में सबसे प्रथम आवश्यकता शाप की है। यदि शाप न होता तो कामसृष्टि के उत्पन्न होने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता। शाप के कारण ही प्रवास की स्थिति उत्पन्न होती है और प्रवास के कारण ही विरह की अवस्था उत्पन्न हो जाती है। 'यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ'।[18] उक्ति के अनुसार यहाँ विप्रलम्भद्वमङ्गार की प्रधानता है। 'अभिलाषविरहेर्स्याप्रवास शापहेतुक इति पञ्चविधः'।[19] के अनुसार विप्रलम्भद्वमत्रङ्गार के पाँच भेद माने गये हैं, जिनका वर्णन मेघदूत में प्राप्त होता है। वैदर्भी रीति, प्रसाद एवं माधुर्य गुण का प्रमुख रूप से समायोजन होने तथा गीति की प्रधानता होने के कारण इसे द्वमत्रङ्गारमूलक प्रगीतात्मक गीतिकाव्य कहा गया है।

अध्ययन का उददेश्य

लोक कल्याण के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना महाकवि कालिदास के साहित्य का उद्देश्य रहा है प्रकृति प्रेम वासना रहित एक निष्ठा दांपत्य जीवन प्रमाण रहित कर्म आदि के भाव मेघदूत में निहित हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मेघदूत में नायक यक्ष के सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन न होकर एक भाग का वर्णन होने के कारण इसे खण्डकाव्य कहा गया है। इस खण्डकाव्य में सबसे प्रथम आवश्यकता शाप की है। यदि शाप न होता तो कामसृष्टि के उत्पन्न होने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता। शाप के कारण ही प्रवास की स्थिति उत्पन्न होती है और प्रवास के कारण ही विरह की अवस्था उत्पन्न हो जाती है। 'यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ'।18 उक्ति के अनुसार यहाँ विप्रलम्भद्वमङ्गार की प्रधानता है। 'अभिलाषविरहेर्स्याप्रवास शापहेतुक इति पञ्चविधः'।19 के अनुसार विप्रलम्भद्वमत्रङ्गार के पाँच भेद माने गये हैं, जिनका वर्णन मेघदूत में प्राप्त होता है। वैदर्भी रीति, प्रसाद एवं माधुर्य गुण का प्रमुख रूप से समायोजन होने तथा गीति की प्रधानता होने के कारण इसे द्वमत्रङ्गारमूलक प्रगीतात्मक गीतिकाव्य कहा गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *साहित्यदर्पण 6/329*
2. *डॉ0 दशरथ ओझा : हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास, पृष्ठ–381–82, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण*
3. *पूर्वमेघ/3*
4. *पूर्वमेघ/10*
5. *पूर्वमेघ/9*
6. *पूर्वमेघ/22*
7. *पूर्वमेघ/56*
8. *पूर्वमेघ/34*
9. *पूर्वमेघ/52*
10. *पूर्वमेघ/32*
11. *पूर्वमेघ/36*
12. *पूर्वमेघ/15*
13. *पूर्वमेघ/18*
14. *पूर्वमेघ/28*
15. *पूर्वमेघ/29*
16. *पूर्वमेघ/40*
17. *पूर्वमेघ/44*
18. *साहित्यदर्पण 3/187*
19. *काव्यप्रकाश 4/44*